स्या रे एवा करम करया हता कामनी, धाम मांहें धणी आगल आधार।
हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती कर ग्रही, कहे महामती मारा भरतार।। ४ ।।

हे धनी! परमधाम में आपके सामने हमने ऐसा कौन सा खोटा काम किया था? महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! अब इस भवसागर में डूबती हुई ब्रह्मसृष्टियों को हाथ पकड़कर निकालो।

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ ४३६ ॥

हारे वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो, जुजवे पर्वतों पाड़्या रे पुकार।
रणवगडा मांहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! आपने हमको इस खेल में ऐसा झटका दिया और रुलाया कि हम पर्वतों में भटकते हुए चिल्ला रहे हैं। इस वीरान जंगल में हम अंगनाएं रो-रोकर कहती हैं कि धनी! आपके बिना इस शरीर को धिक्कार है।

वेदना विखम रस लीधां अमें विरहतणां, हवे दीन थई कहूं वारंवार।
सुपनमां दुख सह्या घणां रासमां, जागतां दुख न सेहेवाए लगार।। २ ।।

हम आपके वियोग में विरह का कठिन रस ले रही हैं और अब (अहंकार छोड़कर) दीन होकर बार-बार विनती करती हैं कि रास में तो स्वप्न में हमने आपके विरह के दुःख को सहन किया, परन्तु अब पहचान हो जाने पर विरह का दुःख सहन नहीं होता।

दंत तरणां लई तारुणी तलफियो, तमें बाहो दाहो दीन दातार।
खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार।। ३ ।।

हम आपकी किशोर अंगनाएं दांतों में तिनका दबाकर चिल्ला रही हैं, हे हमारे दीन दातार! हमारी विरह की अग्नि को बुझाओ। अब हमसे यह विरह का कठोर दुःख सहन नहीं होता। हमें आप अपने चरणों में स्थान दो।

हवे हारया हारया हूं कहूं वार केटली, राखो रोतियो करो निरमल नार।
कहे महामती मेहेबूब मारा धणी, आ रे अर्ज रखे हांसीमां उतार।। ४ ।।

अब मैं कितनी बार कहूं कि मैं हार गई-हार गई। अब हमारा रोना बन्द करके अपने प्यार से निर्मल करो। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! मेरी इस विनती को हंसी में ना टाल देना।

॥ प्रकरण ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ ४४० ॥

हारे वाला बंध पड़्या बल हरया तारे फंदड़े, बंध विना जाए बांधियो हार।
हंसिए रोइए पड़िए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार।। १ ।।

हे वालाजी! आपके खेल दिखाने की इच्छा से हम माया के बन्धन में पड़ गए और अपने इश्क की शक्ति को खो बैठे। देखा जाये तो जाहेरी बन्धन कुछ नहीं, परन्तु देखा देखी चींटी हार की तरह माया में लिपटे चले जा रहे हैं। यहां से निकलने के लिए भले हम रोएं, हंसें और पश्चाताप भी करें, तो भी चींटी हार की तरह यह कबीले या बन्धन छूटते नहीं हैं।

जेहेर चढ़्यो हाथ पांउं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार।
समरथ सुखथाय साथने ततखिण, गुणवंता गारुडी जेहेर तेहेने तेणी विधें झार।। २ ।।

माया का ऐसा जहर चढ़ गया है कि हम इसमें हाथ पांव झटकते हैं और इस जहर से सब अंगों में दुःख होता है। इस जहर को कोई उतार नहीं सकता। हे समर्थ! गुणवान ओझा की भांति हमारे माया के जहर को झाड़ फूंककर निकाल दें जिससे सुन्दरसाथ सुखी हो जाए।

Nijanand App

मांहें धखे दावानल दसो दिसा, हवे बलण वासनाओं थी निवार।
हुकम मोहथी नजर करो निरमल, मूल मुखदाखी विरह अंग थी विसार।। ३ ।।

यहां दसों दिशाओं में माया की अग्नि जल रही है जिसमें तुम्हारी आत्माएं झुलस रही हैं। अब इन वासनाओं को माया की जलन से छुड़ाओ और हुकम को हुकम देकर आत्माओं को मोह से मुक्त करो। अपने सुन्दर स्वरूप का दर्शन देकर विरह को समाप्त कर दो।

छल मोटे अमने अति छेतरया, थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार।
कहे महामती मारा धणी धामना, राखो रोतियों सुख देयो ने करार।। ४ ।।

इस भारी माया ने हमें बुरी तरह से ठगा है। इसकी मार से हृदय छलनी हो गया है। अब मार नहीं सही जाती। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धाम के धनी! अब माया का रोना छुड़ाकर अखण्ड घर का सुख और करार दो।

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ ४४४ ॥

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विख विस्तार।
जीव सिर जुलम कीधो फरी फरी, हठियो हरामी अंग इन्द्री विकार।। १ ।।

हे धनी! अंग में लगी आग की लपटों को कैसे बुझाएं? बार-बार यहां माया का विष बढ़ रहा है। इन हठी हरामी इन्द्रियों की इच्छा ने जीव के ऊपर बार-बार जुल्म किया है।

झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगना ने ठार।
बाल्या वली वली ए मन ए कबुधें, कमसील काम कां कराव्या करतार।। २ ।।

अब आप अपनी अंगनाओं के शरीर से उठती हुई विरह की आग की लपटों को बुझा दो। शीतल सुख देकर अंगनाओं को तृप्त करो। इस मूर्ख मन ने हम रूहों को बार-बार माया में फंसाया। हे धनी! ऐसे बेशर्मी वाले काम हम से क्यों कराये?

गुण पख इन्द्री वस करी अबलीस ने, अंगना अंग थाप्यो दई धिकार।
अर्थ उपले एम केहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने दीधी फिटकार।। ३ ।।

हमारे गुण, अंग, इन्द्रियों को अबलीस (शैतान) के हवाले कर दिया और हमारे अन्दर बिठा दिया। फिर भी दोषी हम ही बने। ऊपरी भाव से हमें पारब्रह्म की अंगना कहलवाकर इन वचनों से और अधिक लज्जित कर रहे हो।

मांहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारुणी तन तछकार।
कलकली महामती कहे हो कंथजी, एवा स्या रे दोष अंगनाओं ना आधार।। ४ ।।

अन्दर के भाव से जब देखें तो जाहिर है कि आपने हमें सजा दी है। महामतिजी कलप-कलपकर कहते हैं कि हे मेरे धनी! आखिर हम अंगनाओं की गलती क्या है?

॥ प्रकरण ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ ४४८ ॥

हरि वाला करि आप्या दुख अमने अनघटतां, ब्राधलगाडी विध विध ना विकार।
विमुख कीधां रस दई विरह अवला, साथ सनमुख माहें थया रे धिकार।। १ ।।

हे वालाजी! आपने हमें अशोभनीय दुःख क्यों दिया? माया के तरह-तरह के व्याधि (रोग) क्यों लगाए? आपने अपने से अलग कर उलटा विरह रस का दुःख दिया जिनसे सुन्दरसाथ के सामने मुझे शर्मिन्दा होना पड़ रहा है।

Nijanand App